एक अजीब दास्तान

पागलपन भी जरूरी है

वंदना शर्मा

Sample Copy, Not for Distribution.

एक अजीब दास्तां

पागलपन भी जरूरी है

डॉ वन्दना शर्मा

Email : vandanareporter@gmail.com

Contact : 09810377233

Sample Copy. Not for Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-5457-0869-9

Price: ₹ 185.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not for Distribution.

एक अजीब दास्तां

पागलपन भी जरूरी है

वन्दना शर्मा

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not for Distribution.

Sample Copy. Not for Distribution.

''पति श्री गौरव शर्मा को समर्पित
जिनके सहयोग से मेरी यह प्रथम काव्य
पुस्तक प्रकाश में आई।''

Sample Copy. Not for Distribution.

क्रम–सूची

क्र	अनुक्रमणिका	पृष्ठ
1.	सूरदास	1
2.	कभी सोचा ना था	2
3.	ख्वाब एक प्यासे पथिक का	3
4.	वक़्त	4
5.	गुलाब	5
6.	लहर–लहर सागर लहराता	6
7.	वो पल	7
8.	चाँद का संदेशा	8
9.	प्रकृति का नियम	9
10.	बहुत बोलती है	11
11.	जिन्दगी तुझसे शिकायत तो कभी ना थी	12
12.	नन्हीं बूंदे	13
13.	बदलाव	14
14.	ना चाहते हुए भी	15
15.	पूछो मत बस	17
16.	क्या लड़की होना गुनाह है?	18
17.	जिसको हँसना आता है	19
18.	आतँकवाद	20
19.	कटु, लेकिन सत्य है	22
20.	करुँ मैं क्या अर्पण	24
21.	नन्हीं कली खिल जाने दो	25
22.	रिश्ते	26
23.	क्यों होता है ऐसा?	27
24.	हे कर्मभूमि भारत	28
25.	वही चेहरा	30

Sample Copy. Not for Distribution.

26.	कुछ क्षणिकाएं	31
27.	दर्द ऐसा मिला	33
28.	क्योंकि तुम कविता नहीं लिखते	34
29.	कभी–कभी	36
30.	जिन्दगी मेरी परीक्षा लेती रही	37
31.	एक नया इतिहास	38
32.	मोहब्बत से डरती हूँ	39
33.	मुझे तो अच्छी लगती है	40
34.	ए चाँद मत हँस तू मेरे ऊपर	42
35.	क्योंकि वो लड़की है	43
36.	जब कोई कली फूल बन जाती है	45
37.	ये तो रब जाने	47
38.	ज़िन्दगी ना इतना रूला मुझको	49
39.	यही तो कहना है मुझे	51
40.	ज़िन्दगी तू इतनी बुरी भी नहीं है	52
41.	महिला आरक्षण बिल	53
42.	यादें	55
43.	तुम्हारी याद	57
44.	हमारी सादगी	58
45.	ये रास्ते	59
46.	प्रकृति : मेरी हँसी	60
47.	याद	62
48.	क्या मिला हमको	63
49.	गुलाब हूँ खुशबु लुटाती हूँ	64
50.	बारिश कब तुम आओगी?	65
51.	मेरा भाई मेरा दोस्त	66
52.	जी लो इस पल को	67
53.	छुक–छुक चलती ट्रेन	69
54.	सपना ही तो है	70
55.	एक थी लड़की	72
56.	झमाझम बारिश	73

Sample Copy. Not for Distribution.

57.	ज़िंदगी का गणित	74
58.	मेरी बहन विनय	75
59.	मम्मी देखो ना	76
60.	मीठी वाणी	77
61.	मेरी माँ	78
62.	अभिव्यक्ति	79
63.	आँखें	80
64.	रूप बदल जाते हैं	81
65.	बता मेरे मन तू क्या चाहता है	83
66.	चेहरे	84
67.	ए मेरे शहर 'बिजनौर'	86
68.	उफ़ ये गर्मी	87
69.	एक अजीब दास्तां	89
70.	खुशी	91
71.	काश! ऐसा हो जाए	93
72.	नहीं होता ना	94
73.	हमारी कहानी	96
74.	ज़िन्दगी का इम्तहान	97
75.	हृदय परिवर्तन	98
76.	सुबह थी धुआं–धुआं	99
77.	मौसम का हाल	100
78.	ज़िन्दगी गणित नहीं है	102
79.	पागलपन भी जरुरी है	104
80.	कुछ खास है मेरी जिन्दगी	105

Sample Copy. Not for Distribution.

एक अजीब दास्तां

वन्दना की कविताएं भी वंदना की तरह ही है। कभी हंसती है, कभी रोती है, कभी शरारत करती ै तो कभी दुलराती है, इन सबके बावजूद उनमें एक आशा है, एक उमंग है। लेकिन कुछ नया करने को आतुर नज़र आती है। कहा भी है–

''आज वक़्त ने मेरा साथ नहीं दिया
मेरी आवाज़ को ओज नहीं दिया
आने वाला कल तो मेरा होगा
न हो निराश मन
अंधेरे के बाद सुनहरा सवेरा होगा।''

'चाँद का संदेशा' में वंदना कहती हैं–

कुछ सपने बुने थे
कुछ ख़्वाब सजाए थे
कुछ पूरे हो गए, कुछ पूरे होने बाकी है
उम्मीद की ओस फूलों पर अभी बाकी है।

लेखिका व्यक्तिगत जीवन में भी दूसरों की मददगार ही है। उसकी कोशिश रही है कि परिचित और मिलने वालों के जीवन पथ को सरल सुलभ बनाने के लिए जो किया जा सके, कर दिया जाए, वह करती भी है। यही मदद समरसता की झलक जगह–जगह उसकी रचनाओं में भरी पड़ी है–

'जिसको हँसना आता है' में लेखिका कहती है–

दूसरों के आंसू पोंछते–पोंछते, खुद को रोना आ जाता है
काँटे का गुलाब से यह कैसा नाता है
एक मन को भाता है, एक तन को चुभ जाता है।

'एक नया इतिहास' कविता लेखिका के जीवन का संकल्प जैसा है। वह कहती है–

लिखेंगे

Sample Copy. Not for Distribution.

एक नया इतिहास
हम भी लिखेंगे
जो समय से मुक्त अमर होगा
हर दिल से जुड़ा होगा
सपना हर आँख का होगा.....

ज़िन्दगी तू इतनी बुरी भी नहीं है' में लेखिका के जीवन का फलसफा, मर्म साफ झलकता है–

जी चाहता है समेट लूँ
इन पलों को अपनी मुठ्ठी में
जब भी होगा गमों से सामना
खोल दूंगी मुठ्ठी
बिखेर दूंगी इन पलों को चारों ओर
और ये पल मुस्कराऐंगे उस समय भी
जब गीली होंगी पलकें.....।

अशोक मधुप
वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक

Sample Copy. Not for Distribution.

वन्दना शर्मा

सूरदास

सूर ने रच डाला अद्‌भुत सूर सागर
संयोग–वियोग, वात्सलय रसों से भर दी गागर
उपमा, रूपक, अनुप्रास से किया श्रृंगार
उत्प्रेक्षा, प्रतीप व बिम्ब–प्रतिबिम्ब से निकला उद्‌गार
वचनवक्रता, कल्पना और माधुर्यता
बाँधे मन को भ्रमरगीत की मधुरता
भक्त का भगवान से ऐसा हो सम्बन्ध
रचे हैं सूर ने विनययुक्त छन्द
सगुण को मण्डन किया, किया निर्गुण का खण्डन
सूर की अनन्य भक्ति से भीग जाता है मन
दृष्टिकूट पदों की रचना और रचा इतिहास
गोपियों का विरह वर्णन, किया उद्धव का उपहास

Sample Copy. Not for Distribution.

कभी सोचा ना था

जिन्दगी इस तरह बदल जायेगी
वक्त पंख लगाकर उड़ जायेगा
दामन में सिर्फ यादें रह जायेगी
है अनिश्चित हर पल यहाँ
आज हैं साथ
ना जाने कल हो कहाँ
कभी सोचा ना था।

Sample Copy. Not for Distribution.

ख्वाब एक प्यासे पीथक का

आओ सुनाऊँ तुम्हें एक कहानी,
ना कोई राजा ना कोई रानी
जा रहा था एक पथिक अपनी ही धुन में
ख्वाबों को बुनता हुआ मन ही मन में
सूरज लगा तेज चमकने
राही छाया लगा ढूँढने
चारों तरफ नज़र दौड़ाई
दूर–दूर तक थी ना कोई परछाई
प्यास से गला सूख रहा था
साहस पीछे छूट रहा था
शायद कहीं कुछ ढूँढ रहा था
ठण्डी छाया के लिए तड़प रहा था
सोच रहा था मन ये उसका
दे दे कोई पानी का छपका
काश! यहाँ कोई पेड़ होता
मौसम कुछ और होता
होती चारों तरफ हरियाली
झूम उठती डाली–डाली
आओ! हम सब पेड़ लगाएँ
धरती को आने वाले संकट से बचाएँ।

Sample Copy. Not for Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not for Distribution.

एक अजीब दास्तान

एक अजीब दास्ताँ

डॉ वंदना शर्मा एक असाधारण कवियत्री हैं। सादगीपूर्ण जीवन एवं सकारात्मक दृष्टिकोण उनकी विशेषता है। प्रकृति प्रेमी साहित्य साधक वंदना को साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न पुरुस्कार प्राप्त हो चुके हैं। श्रीमती कृष्णचन्द्रा स्मृति कहानी एवं कविता लेखन २००७ ,हिमाग्नि अलंकरण २००६ ,साहित्य गौरव २०१० ,अद्यशती अलंकरण २०१० आदि। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन होता रहता है। आकाशवाणी नजीबाबाद बिजनौर से १२ बार काव्यपाठ भी प्रकाशित चुका है। डॉ वंदना व्यक्तिगत जीवन में भी दूसरों की मददगार ,जिंदादिल ,आशावादी हैं। डॉ वंदना की कवितायँ भी उन्हीं की तरह ही हैं। कभी हसती हैं ,कभी शरारत करती हैं ,तो कभी दुलराती हैं। डॉ वंदना का भावुक मन कभी समाज से बगावत करता है। कभी प्रकृति साथ खुश होकर झूमता है। कभी रूढ़ि परम्परा प्रहार करता है तो कभी चिंतन करने को विवश करता है।

लेखक से संपर्क के लिए :
vandna.reporter@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
POETRY
ISBN 978-1-5457-0869-9

Sample Copy, Not for Distribution.